"नक्शा विशेष अथवा अन्दर की खास बात"

"नक्शा" यानी के आऊट लाईन । अर्थात रूपरेखा सम्बन्धित विशेष विषय के बारे में । यहाँ कौन सा विषय है ? जिसके लिये रूप रेखा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है । आत्मा का कल्याण कैसे सम्भव हो । इस विषय के बारे में विशेष रूप रेखा अथवा "विशेष नक्शे" की आवश्यकता है । यह नक्शा उपलब्ध स्थिति अथवा वातावरण को ध्यान में रखते हुऐ ही विशेष-2 काबिल इन्जीनियरों अथवा मुक्त हुई आत्माओं विशेष द्वारा ही

उस अकाल पुरख परमात्मा की समयानुसार विशेष स्थिति को ध्यान में रखते हुए "विशेष दुर्लभ रजा" अनुसार ही केवल आवश्यक रूप से प्रस्तुत अथवा प्रत्यक्ष किया जाता है निश्चित रूप से। जीव अनन्त पापों के ढेर पर बैठा हुआ कैसे अपनी आजादी के सुपने को साकार करने में समर्थ हो सकता है कभी सुपने में भी। निरन्तर पाप को एकत्र करता हुआ जीव इस समस्या पर केवल विचार करने में भी असमर्थ ही है निश्चित रूप से। जो कोई भी दुर्लभ आत्मा अपने को इस कैदखाने से आजाद करवाना चाहती है उसे सबसे पहली ताकीद की जाती है कि वो अपने द्वारा निरन्तर किये अथवा कमाये जाने वाले पापों से तौबा करे। फिर जो पाप उसके अनन्त जन्मों से अनन्त भण्डार के रूप में इकट्ठे कर रखे हैं। जिन में से कुछ पाप अथवा पुण्य दोनों को ले कर के वो इस दुर्लभ अवसर को प्राप्त हुई है। उन्हें शांति से भुगतने अथवा हज्म करने के लिये कृत संकल्प बनाये रखे, अपने को प्रत्येक आने वाली दुर्गम स्थिति में निश्चित रूप से। फिर हर वक्त अपना ध्यान केवल ईमानदारी से अपने भुगतानों अथवा विशेष-2 जिम्मेदारियों को भुगताते अथवा निभाते हुऐ निश्चित रूप से निरन्तर उस "परम चेतन सत्ता" अथवा अकाल पुरख परमात्मा की तरफ ही रखे अथवा उससे जुड़ा रहे। "केवल निर्मल पाक अथवा पवित्र हृदय" से ही उस पवित्रता के अपार

सागर अथवा भण्डार यानी के अकाल पुरख परमात्मा को निरन्तर पुकारने से अवश्य तेरा दुर्लभ कभी सुपने में भी साकार न हो सकने वाला "सुपना" इस जेलखाने से तेरे स्वंय के मुक्त होने का अवश्य आवश्यक रूप से साकार हो ही जायेगा केवल उस अकाल पुरख परमात्मा की विशेष दया अथवा रजा से । इस "दुर्लभ दया विशेष" के तू करोड़ यत्न कर ले, इन पापों के ढेर पर बैठ करके ही तेरा आजादी का सुपना कभी भी किसी भी तरह से पूरा संभव होना दुर्लभ ही साबित होगा । इन पापों को निरन्तर इकट्ठा करने के कारण ही तेरी शारीरिक समर्था निरन्तर घटती जा रही है । इस क्षमता के अभाव के कारण ही तू योग कमाने में असमर्थ हो गया है । अब मदद के लिये "केवल अपने मूल" को पुकारने के तेरे पास कोई भी उपाय उपलब्ध ही नहीं हैं । चारों तरफ नकली परमात्माओं का बाजार गर्म है । "असंख्य सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" इन विशेष-2 मत-धर्म स्थापित करने वाले नकली परमात्माओं के प्यारे-2 रूपों में छुप कर के केवल अपना ही ध्यान करवा कर के, तेरा "दुर्लभ मानुख जन्म" अपने खाते में ट्रांसफर करती जा रही है निरन्तर । तेरे ये विशेष-2 श्रेणी के नकली परमात्मा खुद स्वंय भी नहीं जानते कि ये असल में कौन उन को नचा रहा है । ये सब इन सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों को न देख पाने के कारण ही केवल अपनी तथा दूसरी आत्माओं की हस्ती निरन्तर इस अन्धे कुँऐं में डुबोते चले जा रहे हैं निश्चित रूप से

ऐसा यकीनी तौर पर तू जान ले अभी से । समझ ये सब यही रहे हैं, कि हम सब प्रभु का ही कार्य कर रहे हैं और प्रभु हमारे द्वारा किये जा रहे इन समस्त कार्यों से बहुत प्रसन्न है । जबकि प्रभु का तो इसमें कहीं सुपने में भी कोई विचार ही नहीं है फिर प्रभु प्रसन्नता की कोई कल्पना कैसे सुपने में भी साकार होनी समर्थ हो सकती है । इस भयानक सच्चाई से ये तेरे समस्त परमात्मा पूरी तरह से अनभिज्ञ ही हैं ऐसा तू यकीनी तौर पर जान ले निश्चित रूप से । ये एक ऐसा सच है जिसे तेरे ये निकृष्ट स्थापित किये गये परमात्मा सहित, सभी कभी भी देखने-सुनने अथवा मानने को तैयार ही नहीं होंगे सुपने में भी । ये विरोधी ताकतों का एक बहुत भयानक सूक्ष्म जाल है निश्चित रूप से । इसी कारण तुझे विशेष सावधान रहने की ताकिद की जाती है । इन नकली परमात्माओं के संग से भी दूर रहने की विशेष रूप से तुझे निजी आवश्यकता है तेरी अपनी ही अच्छी सेहत के लिये । परमात्मा तक पहुँचने की क्षमता इन "खूनी लोभी भेड़ियों" में कैसे कभी सुपने में भी प्रत्यक्ष होनी संभव हैं । अनन्त प्रयन्नों के बावजूद भी इसका तो कोई विचार ही नहीं है । मदद के लिये तू इन को पुकारता अथवा ध्यान करता है नतीजा केवल उल्टा ही प्रत्यक्ष होता है । ये मदद तो क्या करेंगे, उल्टा तेरा दुर्लभ मनुष्य का जन्म सहित समस्त उपलब्धियाँ भी हज्म कर ही जायेंगे । तेरी लाख अपने को बचाने की कोशिश करने के बावजूद भी तू इनके

अदृश्य खूनी शैतानी पंजो से अपने को कभी सुपने में भी सुरक्षित रख ही न पायेगा । इस होने वाले निश्चित नतीजे को तो अभी से जान ले । अब सवाल है कि अपनी पहाड़ सी जिम्मेदारियों का भुगतान कैसे हो ? इसके लिये तुझे अपनी आवश्यकताओं की निश्चित रूप से कटौती करनी ही पड़ेगी आवश्यक रूप से अपने को केवल सुरक्षित रखने की दृष्टि से । ऋषि लोग क्यों जंगलों में रहना पसन्द करते थे ? "जरूरत" नाम की बीमारी से बचने के लिये केवल । दूसरा एकांत वास । ताकि केवल उस "परम चेतन सत्ता" का निश्चित रूप से परेशानियों से ऊपर उठ कर के निरन्तर ध्यान किया जा सके । क्या उन्हें ये ज्ञान अपने गुरूओं से नहीं प्राप्त होता था ? अवश्य केवल मनुष्य ही मनुष्य का मार्ग-दर्शन करने में सस्ता तथा सुलभ उपाय है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । फिर सोच क्या ये दुर्लभ श्रेणी के ऋषि-मुनि क्या अपनी सूरत अथवा मुर्दे या कब्र का ध्यान करवाते थे, या कि केवल उस "परम चेतन सत्ता" का ध्यान करने को कहते थे। जिसे "अकाल" यानी के जो काल अथवा शैतान का भी केवल निश्चित रूप से "दुर्लभ काल" ही है इसीलिये उसे अकाल कहा जाता है । आज के ये तेरे स्थापित किये हुऐ परमात्मा इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के जाल में फँसे हुऐ हैं। इन की बुद्धि इन शैतानों के कारण मोहित है तभी ये "मुर्दे विशेष" के ध्यान की बात बताते हैं । इनकी स्वंय की आवश्यकतायें अपार हैं फिर तुझे कैसे सीमित

होने का संदेश दे सकते हैं । तू सीमित हो गया तो फिर इनका धन्धा कैसे चलेगा ? दुर्लभ सेवा नाम के निकृष्ट कर्म अथवा ड्यूटी निभाने से इन्हें क्या हासिल होगा विचारणीय प्रश्न है । "ओन्ही दुनिया तोड़े बन्धना अंन पाणी थोड़ा खाइआ ।" इस प्रभु प्रेरणा से स्पष्ट ही है कि "ओन्ही दुनिया तोड़े बंधना" यानी के केवल वही इस जेलखाने की दीवारों को तोड़ने में समर्थ हो सकता है जो "अन्न पाणी थोड़ा खाइआ" अर्थात इसका रूहानी भाव केवल संसार में गुजारे मात्र की ही प्रविष्टि है । शारीरिक श्रम करने वाले को तीनों वक्त पक्का भोजन आवश्यक रूप से केवल अपने को स्थिर रखने के लिये खाना जरूरी ही है । फिर क्या कम खाने से वो कैसे अपने को स्थिर ही रख सकने में समर्थ हो सकेगा कभी सुपने में भी । इसलिये प्रत्येक प्राणी को अपने श्रम अनुसार ही केवल अपनी रोजमर्रा की व्यस्त रहने वाली जिन्दगी के अनुसार ही, उसे भोजन अथवा खुराक की आवश्यकता है । यदि आप केवल दूसरे को देख करके ही अपनी ज़रूरतों को बढ़ाते जायेंगे, तो इन आवश्यकताओं का तो आप को अनन्त जन्मों तक निरन्तर कोशिशें करते रहने के बावजूद भी कभी भी अन्त प्राप्त कर पाने में आप समर्थ हो ही न सकोगे सुपने में भी । परमार्थ में राजा केवल वही है जिसकी आवश्यकतायें नगण्य ही हैं केवल । संसारी राजा वही है जिसकी जरूरतें बहुत विशाल हैं । यदि आप सच्चे परमार्थी हो तो केवल अपनी आवश्यकताओं को

केवल अपनी जरूरी-जरूरतों के अनुसार सीमित करो ! जितने कम से कम में कार्य सिद्ध हो जाये केवल उसी तक अपना ध्यान तथा श्रम खर्च करो । शेष जोखिम के लिये जरूरतमंदो का ख्याल रखते हुऐ सुरक्षित रखो, केवल अपने ध्यान को उस "परम चेतन सत्ता" के साथ निरन्तर जोड़ने के लिए अथवा दृढ़ बनाने के वास्ते । तभी कोई आप पर भी विचार करेगा अवश्य । ये अनन्त जन्मों का होम वर्क है जिन्दगी भर के लिये व्यस्त रहने का । तभी आप की जरूरतें कोई अवश्य सीमित करने में मदद करेगा । जब आप स्वंय अपनी जरूरत को कम करने में दृढ़ बनेंगे । सामान तो वही एकत्र करता है जो यहाँ रहना चाहता है । यदि आप यहाँ रहना पसन्द नहीं करते तो फिर इन सबसे आप का क्या सरोकार हो सकता है । केवल समय को धक्का ही तो देना है । अवश्य कोई और भी फिर आप की इस धक्का लगाने में मदद करेगा ही निश्चित रूप से । यदि आप फिजूलखर्ची अथवा उपलब्धियों को रंग तमाशे में खर्च करना ही पसन्द करेंगे तो अवश्य कोई और भी ताली ही पीटेगा केवल । क्योंकि उसके लिये तो ये केवल एक तमाशा ही तो है । राजा सिद्धार्थ इकलौते मालिक थे राज के स्वंयवर में अपने पुरूषार्थ को साबित करके कन्या को ब्याह करके लाये थे । इकलौते बालक के पिता थे लेकिन जिन्दगी की सच्चाई को जब अनुभव किया तो क्या देखा, कि सब तरफ केवल मौत ही मौत नाच रही है, ये ज़िन्दगी केवल एक भयानक कैद खाना

ही है। मैं जो कुछ भी एकत्र कर रहा हूँ वो समस्त राज पदार्थ-स्त्री-पुत्र तथा स्वयं का शरीर भी, आज नहीं तो कल अवश्य आवश्यक रूप से मुझ से छीन ही लिया जायेगा अथवा दूर कर ही दिया जायेगा। मेरे लाख प्रयत्नों के इन स्थिर रखने के प्रयासों के बावजूद मैं कभी भी किसी भी काल में इन्हें स्थिर रखने में समर्थ हो ही नहीं सकूँगा सुपने में भी। जब ये छीनी जायेंगी वस्तुयें तो मुझे बहुत दुख अथवा अभाव का सामना करना ही पड़ेगा निश्चित रूप से। इस दुख से बचने के लिये मैं अभी से ही क्यों नहीं अपने को तैयार कर लूँ। अर्थात इनके दूर कर दिये जाने से पहले ही मैं इनका त्याग कर दूँ। यानी के मैं इनके बिना ही जीने अथवा रहने का अभ्यास करूँ। इसी विचार को सार्थक बनाने के लिये सिद्धार्थ ने एक-2 करके अपने स्वयं के सभी उपलब्ध पदार्थ अथवा साधनों का जीते जी ही केवल त्याग कर ही दिया और एकांत वास के लिये जंगल की शरण ली और अपनी समस्त आवश्यकताओं से ऊपर उठ कर के उस "परम चेतन सत्ता" का ध्यान किया। तभी किसी और ने भी उस "दुर्लभ आत्मा" का कार्य भी अवश्य आवश्यक रूप से सिद्ध कर ही दिया निश्चित रूप से अर्थात निवारण को प्राप्त हुई वह दुर्लभ आत्मा। अब उस आत्मा के नाम का ढोल पीटने अथवा बाजा बजाने से आपका कुछ भी कल्याण होना सम्भव कभी सुपने में भी दुर्लभ ही साबित होगा। उसकी मूर्ति बना कर के आप केवल अपना

माथा तो फोड़ सकते हो उस पत्थर के भगवान से पर इस जेलखाने से अपने को कभी सुपने में भी मुक्त होने का सुपना साकार करने में मदद करवा पाने में सफल नहीं हो सकोगे निश्चित रूप से जान लो । उस पत्थर की पूजा का नियम केवल आपका ये कीमती दुर्लभ मनुष्य का जन्म अवश्य निश्चित रूप से इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के खाते में ही बदल जाने में मदद करेगा इसे यकीनी तौर पर जान ले अभी से । उस सिद्धार्थ नाम की आत्मा से लाभ प्राप्त करना चाहते हो तो केवल उसके बताये मार्ग का अपनी निजी जिन्दगी में अनुसरण करो अथवा व्यवहार में लाओ । उनकी अथवा उनकी चेतनाओं से सम्बन्धित किताब की पूजा करने अथवा उसके नाम की माला जपने से, कभी सुपने में भी आप इस जेलखाने से अपने को मुक्त करवा पाने में सफल न हो सकोगे ! भाव एक ही है कि अपने को अपनी समस्त आवश्यकताओं से ऊपर उठाओ जन्म जन्मांतरों में निरन्तर फिर किसी न किसी एक जन्म में आप का ये सुपना अवश्य साकार हो ही जायेगा अवश्य हो सकता है कि यही वह दुर्लभ जन्म हो, जिसमें कि आपका अपने मूल से साक्षात्कार होना निश्चित हो । केवल यही विचार रख कर के निश्चित रूप से पूरी ईमानदारी तथा वफा के साथ इस जिन्दगी भर के अनन्त जन्मों के होम वर्क को पूरी तरह से समाप्त करने के लिये ही केवल जुट जाओ । तभी कोई अवश्य आप का नीरस उक्ता देने वाला व्यस्त रहने का

कार्यक्रम, सदा के लिये समाप्त कर ही देगा यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । सिद्धार्थ की जगह नानक-गोबिंद-ईसा-मुहम्मद इत्यादि नाम लिख लो तथा उन आत्माओं से सम्बन्धित उपलब्ध किताबें सामने रख लो । सब चीजें शेष अपने आप स्पष्ट हो जाती हैं, कि इन सब की पूजा-ध्यान अथवा गाजा-बाजा ढोल इत्यादि आप को डूबने में तो अवश्य मदद करेगा ही पर इस "दुर्लभ सामान" को अपने साथ अथवा गले में बाँध कर के कभी सुपने में भी अपने तैरने के अभ्यास को पूरा न कर सकोगे निश्चित रूप से अभी से गाँठ बाँध लो ।

संसार में गुजारे मात्र की प्रविष्टि तो समझ आ गई, अब अपने मत धर्म परमात्मा आदि का ढोल पीटने में ही अपने को श्रेष्ठ स्थापित करते हुऐ अपना कीमती दुर्लभ मनुष्य का जन्म बरबाद करते चले जा रहे हैं । मत-धर्म बदलने से समस्या हल नहीं हो जाती । आत्मा जब समाज में रहेगी तो उसका जन्म किसी न किसी धर्म विशेष में ही तो प्रत्यक्ष होगा । और धर्म नाम का पत्थर केवल डूबने के ही लिये उस के गले में पैदा होते ही अवश्य बाँध ही दिया जायेगा । सरदार के घर जन्मेगी तो पकड़ कर बाल बाँध दिये जायेंगे । हिन्दू के जन्मेगी तो पकड़ कर मुंड दिया जायेगा इत्यादि, सभी जमातों में केवल यही इसी तरह की क्रियाओं से आत्मा को केवल डूबने के ही लिये जोड़ दिया

जायेगा। प्रभु प्रेरणा स्पष्ट है कि "छोडह वेस-भेख-चतुराई-दुविधा इह फल नाहीं जीउ ।" कि यदि तू इस कैद खाने से अपने को मुक्त करवाना चाहता है तो, अवश्य आवश्यक रूप से तुझे अपने को इन चारों लफजों में व्यवहारिक रूप से ऊपर उठाना ही पड़ेगा । अर्थात सभी मत-धर्म सच्चे परमार्थी के लिये केवल एक कीचड़ से अधिक अर्थ नहीं रखते । फिर एक मत-धर्म छोड़ कर के दूसरे को अपनाने से मुक्ति कैसे हो जायेगी इस जेलखाने से अर्थात एक कीचड़ से निकल कर के दूसरे कीचड़ में घुस जाने से तू कैसे कीचड़ से अपने आप को मुक्त करवा पाने में समर्थ हो सकेगा रहेगा तो केवल तू अपने इस निजी आविष्कार रूपी कीचड़ में ही न फिर बार-2 कीचड़ से मुँह भरना और फिर मल-2 कर के नहाते रहना इसी धन्धे में तेरे अनन्त जन्म डूब चुके हैं । पर अभी तक तू अपने को इस कीचड़ से मुक्त नहीं कर पाया । जहाँ हो वहीं रहो केवल अपने को इस कीचड़ से ऊपर उठाओ क्योंकि आप केवल एक कीचड़ नहीं हो आप की हस्ती दुर्लभ है। अर्थात जब तक जल कीचड़ में रहता है वो अपनी हस्ती को नहीं पहचान पाता लेकिन जब सूर्य किरण की तपश का "दुर्लभ संग" उसे मिलता है तो वह स्वाभाविक रूप से कीचड़ को छोड़ कर के अलग होता है उसके इस निकृष्ट संग से ऊपर उठता है । फिर नीचे देखता है तो उसे घृणा होती है । कि मैं आज तक अपने को केवल एक कीचड़ ही समझता रहा केवल इस निकृष्ट संग के ही

कारण मेरी हस्ती तो आकाश में रहने वाली है । और मैं इस निकृष्ट संग के कारण ही केवल दुनिया के पैरों में ठोकरें ही खाता रहा । इसी तरह से जब तक आत्मा उस सूर्य अर्थात "परम चेतन सत्ता" का दुर्लभ संग जप-ध्यान इत्यादि, अपने को केवल निर्मल पाक-पवित्र रख कर के नहीं करती उसे अपनी इस "अविनाशी सत्ता" का एहसास अथवा अनुभव कभी सुपने में भी होना सम्भव ही नहीं है । अर्थात वो अपने को केवल कीचड़ अथवा शरीर ही समझती रहेगी केवल ।

"धुर की वाणी आई जिन सगली चिंत मिटाई ।" इस प्रभु प्रेरणा का पहला जो बाहरी भाव है वो केवल आप की इस समस्या को हल करने में पूरी तरह से समर्थ है । आपकी समस्त चिन्ता अपने धन्धे अथवा व्यवहार निपटाने की, इस "अकाल पुरख परमात्मा" की "आत्मिक प्रेरणा" को जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के रूप में लिख कर के आप को प्रत्यक्ष दिया गया है केवल साक्षी बना करके अपने सभी व्यवहारों को निपटाईये । इससे आगे बढ़ने की समस्त कोशिशें आप को केवल उस के दरबार में शर्मिन्दा होने पर ही केवल मजबूर कर देंगी । आप की अपनी ही बनाई हुई सभी अदालतों में भी इन्हीं किताबों को साक्षी बना कर के ब्यान लिये जाते हैं और फिर सभी फैसले प्रत्यक्ष किये जाते हैं । यानी के ये ढंग परमात्मा की साक्षी का और ढंगो

से बेहतर ही है निश्चित रूप से । अब आप का क्या धंधा है कि इनको पूजने में अपने को श्रेष्ठ समझते हो । आपके विचार में इन में परमात्मा छुप करके बैठता है । ये बुद्धि का विषय कदापि कभी सुपने में भी विचाराधीन हो नहीं सकता । इन सभी धन्धों का लाभ केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को ही मिलता है। क्योंकि इस जेलखाने से मुक्त होने का अवसर केवल इस "दुर्लभ मानव शरीर" में ही है । और जब आप अपने "दुर्लभ अवसर" को अपने को मुक्त करवाने के कार्य पर, खर्च न करके उन व्यर्थ की बाहरी क्रियाओं पर खर्च कर देते हो, तो अवश्य आप इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के ही मकसद को पूरा करने में मददगार साबित होते हो निश्चित रूप से । क्योंकि इन सब व्यर्थ के कार्यो का जुर्माना पहले से ही निश्चित है और भुगतने के लिये फिर आपको कोई न कोई पिंजरा तो अवश्य रोशन करने पर मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित आवश्यक रूप से। अर्थात इन ताकतों का मुल्क ही केवल रोशन होगा। सोचो यदि आत्मा न यहाँ रहे, तो फिर इन सब रूपों का किसी के लिये क्या अर्थ हो सकता है। केवल इसी गुप्त मकसद को पूरा करने अथवा कायम रखने के लिये ही ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" निरन्तर आपके "दुर्लभ अवसर" को निरन्तर इन्हीं तरह के बाहरी व्यर्थ के कार्यो पर खर्च करवा कर के, आप को सदा के लिये बन्दी बनने पर मजबूर कर ही देती हैं और आपका धन्धा क्या है कि जो ये भेद बताये, आप

उसकी जिन्दा खाल ही उतरवा देते हो या सूली पर ही चढ़ा देते हो आप का इतिहास इन्हीं तरह के अपने उत्कृष्ट-2 कारनामों तथा उपलब्धियों से भरा पड़ा है ठूंस-ठूंस करके । "अंधे गूगे अंध अंधार । पाथर ले पूजह मुगध गवार । ओह जा आप डूबे तुम कहा तरणहार ।" अर्थात पत्थर अथवा जड़ पदार्थो इत्यादि किताबों विशेष को, जल में बहा कर देख ले नतीजा उसी वक्त प्रत्यक्ष हो जायेगा निश्चित रूप से कि ये तो स्वयं डूब रहे हैं तेरे "विशेष-2 परमात्मा दुर्लभ" फिर तू इन्हें गले में बाँध कर अथवा सिर पर धर कर के ही केवल कैसे तर जायेगा या तुझे पार करवा देने में ही ये तेरे "परमात्मा विशेष" कैसे समर्थ हो सकेगें, कभी सुपने में भी केवल असमर्थ ही साबित होंगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर इनका बोझा केवल तेरे को डुबोने में ही समर्थ साधन साबित होगा निश्चित रूप से, तरने का तो कोई विचार ही नहीं है सुपने में भी यकीनी तौर पर और तू इन्हें सिर पर धरे नाचने कूदने में ही केवल व्यस्त है पूरी तरह से फिर सोच तो सही इसका क्या नतीजा निकलेगा ? अर्थात केवल इस धन्धे से डूबना ही निश्चित है आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में केवल इसी पुस्तक विशेष का एक ही लफज "सत" व्यवहार में ले आ जिन्दगी भर के व्यवहार को सत कर ले, और फिर सत का रूप हो कर निरन्तर उस सत के निर्मल-पवित्र भण्डार को केवल पुकार भर ले आजीवन फिर देख चमत्कार, केवल ये एक लफज विशेष

ही तुझे इन निकृष्ट अधूरे मुल्कों में रहने ही नहीं देगा अर्थात तुझे सदा के लिये इन कैदखानों से मुक्त करवाने में केवल प्रत्येक काल में समर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से, फिर शेष पुस्तक को कैसे तथा किन लफजों से "महिमा विशेष" को ब्यान ही किया जा जाये ! अब अन्दर के नक्शे अथवा प्लान की रूप रेखा पर विचार किया जाता है । ये रूप रेखा बड़े ध्यान अथवा सावधानी के बनानी ही लाभकारी सिद्ध हो सकेगी केवल । क्योंकि वो मुक्ति का गुप्त सूक्ष्म रास्ता आपके इसी शरीर अथवा घर में ही प्रत्यक्ष विद्यमान है । ये विरोधी "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकत" बहुत चालाकी से इस द्वार अथवा रास्ते पर पर्दा डाल करके, काले से रंग का आप को गुमराह करने के लिये निरन्तर अपनी पूरी ताकत के साथ यहाँ हर समय उपलब्ध हैं । आपके समस्त प्रयासों को इस तलाश से आप को दूर करने अथवा निष्फल बनाने के लिये ये विरोधी ताकतें निरन्तर प्रयत्नशील रहती हैं अपने सभी साधनों को प्रयोग में लाते हुए । शेष सभी बाहर के कार्यो में निरन्तर उलझाने अथवा व्यस्त रखने के लिये ये निरन्तर उल्टी प्रेरणायें देती ही रहती हैं । ताकि आप सदा इन्हीं और इनके द्वारा निर्देशित कार्यो में ही केवल व्यस्त रहें । जिससे आप को अपनी इस आवश्यक तलाश के लिये न तो समय ही मिले और अगर कुछ मिले तो तब, जब आप की ये शारीरिक समर्था घट अथवा खत्म ही हो चुकी हो । इस तलाश के लिये शारीरिक समर्था का होना

आवश्यक ही है । इसे घटाने के लिये ही केवल आपको काम जैसे निकृष्ट, लेकिन आप की नजर में केवल उत्कृष्ट धन्धे में निरन्तर व्यस्त रखा जाता है, ताकि आप अपनी शारीरिक क्षमता को खो करके आप अपने इस निजी आवश्यक कार्य अर्थात तलाश को करने का विचार भी न कर सकें । आप की समस्त जवानी की ताकत को केवल इसी जरूरी धन्धे पर खर्च करवा कर के इस "तलाश विशेष" को फालतू की चीज साबित करके बुढ़ापे में करने के लिये अलग से रख दिया जाता है । अगर कोई करने भी लगता है तो उसकी भी रोज की सारी उपलब्ध ताकत को, पहले और दूसरे जरूरी-2 कार्यों को साबित करके उन पर व्यर्थ खर्च करवा दिया जाता है बड़ी चालाकी से, फिर जब शरीर थक जाता है तब कहा जाता है कि अब अपनी फालतू की तलाश कर लो । "नतीजा" आप के साथ रोज होता ही है । एक ही मिसाल स्पष्ट है, कि आप को परमात्मा को याद करने से ज्यादा केवल फोन को सुनना अथवा उस की बैटरी को चार्ज करना ज्यादा कीमती अथवा जरूरी लगता है शेष आप स्वंय ही जोड़ लीजिये । दोनों आँखों के पीछे अपनी तलाश को सार्थक बनाने के लिये किस का विचार ध्यान किया जाये ? यह अन्दर की बात है इसे अच्छी तरह से आप सोचिये । कौन समर्थ है आप की मदद करने में ? केवल उसे ही ध्यान में रखिये यदि आप की नजर में कोई

"मुर्दा या कब्र" यानी के कोई प्यारी-2 सी शक्ल अथवा शरीर आपकी मदद करने में समर्थ है, तो अवश्य आप को किसी मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ से अपनी इस "दुर्लभ नजर" का एक बार फिर से मुआयना करवाने की अवश्य आवश्यकता है निश्चित रूप से, रूप अथवा शरीर केवल एक पिंजरा है, जो स्वंय कैद है वो कभी सुपने में भी आप का यह "दुर्लभ सपना" साकार करने में कभी भी किसी भी काल में समर्थ हो ही नहीं सकता और यदि वो अपने को मुक्त करवा चुका है, वो अपने को प्रस्तुत करने के लिये रूप अथवा शरीर कहाँ से लायेगा ? "नियमानुसार" ये सभी तीनों शरीर मनुष्य जन्म में ही केवल नौ महीने गर्भ घोर अथवा भयानक नाम के "नर्क" को भुगतने पर ही प्रत्यक्ष होते हैं । और फिर समस्त जुर्माना चुकाये बिना आप इन तीनों शरीरों अथवा पिंजरों से कभी सुपने में भी अपने को आजाद करवाने का सुपना मत देखियेगा । अर्थात आप चाह कर के भी इन से बिना जुर्माना चुकाये कभी मुक्त हो ही नहीं सकते अनन्त अकथ प्रयन्नों के बावजूद । इस मानव शरीर को तो आप किसी भी साधन से नष्ट कर ही सकते हो पर दूसरे बाकी के दो शरीरों को आप कभी भी किसी भी काल में अनन्त प्रयन्नों के बावजूद किसी भी साधन से कभी सुपने में भी नष्ट कर ही नहीं सकते ऐसा आप निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो अभी से । स्वाभाविक मौत के अलावा किसी भी तरह से अपने अथवा किसी भी दूसरे मानव शरीर को नष्ट करना

यानी के "आत्मघात या हत्या" केवल अपने हाथ से अपने लिये "घोर नर्क" अथवा "निकृष्ट भोगी जूनें" ही लिखना है निश्चित रूप से इसीलिये इसे याद करवाने के कार्य को, जब एक आत्मा अपनी उपलब्ध शारीरिक समर्थानुसार पूरा कर लेती है तो फिर दूसरी आत्मा को तैयार करवा कर के इसी बताने के कार्य को प्रत्यक्ष करने के लिये प्रस्तुत किया जाता है। अगर फिर से पहली आत्मा अपने को प्रत्यक्ष करने में नियमानुसार यदि समर्थ हो तो फिर दूसरी आत्मा को प्रत्यक्ष करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है निश्चित रूप से। अब सोचो क्या इस बताने के कार्य को करने के लिये क्या "नानक" से पहले कोई नहीं था क्या ? सृष्टि को तो चलते अनन्त काल बीत चुका है। फिर कौन था जो बताता रहा ? और क्या गोबिंद के बाद कोई आत्मा नहीं थी इसी कार्य को बताने के लिये ? तो विचार से आप अवश्य समझ सकोगे, कि नानक से पहले अनन्त नानक इसी बताने के कार्य को कर चुके हैं और गोबिंद के बाद भी अनन्त नानक अथवा गोबिंद जैसे अलग-2 नाम अथवा शरीरों में किसी न किसी स्थान विशेष पर इसी बताने के कार्य को करते आ रहे हैं, अब भी कर रहे हैं तथा आगे भी इसी तरह से ये बताने का कार्य अवश्य आवश्यक रूप से होता ही रहेगा निश्चित रूप से। अब आप ऐसे अनन्त नामों अथवा शरीरों का ध्यान करते रहोगे ढोल पीट-2 कर बाजे बजा-2 कर, तो भाई ये "बीत गये" तेरी कुछ भी मदद करने में कभी सुपने

में भी कैसे समर्थ हो सकेंगे जरा सोच तो सही ! यही कारण है कि नानक के बाद अंगद, अमरदास, रामदास, अर्जुन देव, हरगोबिंद, हर राय, हर किशन, तेग बहादुर और फिर गोबिंद सिंह नाम के शरीरों अथवा पिंजरो को रोशन करने वाली अलग-2 आत्मायें प्रत्यक्ष हुई इसी बताने के कार्य को करने के लिये । कि एक परमात्मा के सिवाय इस जेल खाने से आजाद करवाने में और कोई भी कभी सुपने में भी समर्थ हो ही नहीं सकता । यही बताने का कार्य अब भी चल रहा है और यही आगे इसी तरह से कहीं न कहीं अवश्य आवश्यक रूप से चलता ही रहेगा । यही सब बातें चल रही ठगी को ध्यान में रखते हुऐ, प्रभु ने एक ही किताब में केवल इशारे के रूप में लिख कर के आप को दे दी है, अब यदि आप के पास इसे पढ़ने तथा विचार करने तथा इसके अनुसार व्यवहारिक जीवन जीने के लिये ही यदि आप के पास कुछ समय नहीं है, तो इस कैदखाने का कैदी बने रहने का दोष केवल आप का अपना ही कमाया हुआ है निश्चित रूप से । दूसरा बाद में षोर मचाने से क्या फायदा। बताने वाला जो कोई भी कभी भी कहीं भी प्रत्यक्ष होगा केवल यही सब बातें ब्यान करेगा जो प्रभु ने पाँच सौ साल पहले ही लिख करके दे दी हैं केवल आप की सुविधा अथवा आपको धोखे से बचाने के वास्ते । ये किताब पूजा नहीं मनन करने के वास्ते आप को दी गई है । ये केवल "अकाल पुरख परमात्मा" के सिवा और किसी का जप

अथवा ध्यान करने की प्रेरणा कभी सुपने में भी नहीं देती । "गुर की मूरत मन में ध्यान" "गुरू" लफज की जगह केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" यानी के शब्द को लिख मन शैतानी ताकतों का अंश है इसे बस में किये बिना तेरा ये कार्य ध्यान का कभी सार्थक हो ही नहीं सकता । इसी का इलाज प्रभु प्रेरणा में निश्चित रूप से प्रत्यक्ष है कि अपने मन को इस "रागमई प्रकाशित शब्द" के साथ जोड़ । "गुरू कै सबद-मन्त्र-मन-मान" अब प्रभु प्रेरणा स्पष्ट ही है कि गुरू लफज जो प्रयोग किया गया है वो केवल इस "प्रकाशित रागमई आवाज" अर्थात शब्द को गुप्त रखने के लिये केवल किया गया है ! गुरू और शब्द लफज केवल परमात्मा लफज की जगह ही प्रयोग में लाये गये हैं केवल । "मन्त्र-मन-मान" अर्थात जैसे साँप को बस में करने का उपाय अथवा मन्त्र बीन की धुन है उसी तरह से इन मन रूपी साँप को भी बस में करने का केवल एक ही मन्त्र अथवा उपाय है केवल ये "रागमई प्रकाशित आवाज" जिसे शब्द अथवा परमात्मा या "परम चेतन सत्ता" यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" ही कहा जाता है । और किसी भी उपाय से ये भयानक मन रूपी साँप तेरे बस आने वाला कभी सुपने में भी सम्भंव ही नहीं है ऐसा तू निश्चित रूप से जान ले अभी से "मान" का भाव है आदर-सत्कार इत्यादि देना अथवा रूक ही जाना । रास्ते में जैसे आप को कोई श्रेष्ठ मिल जाये, किसी भी अवस्था अथवा रूप में तो तुरन्त रूक जाते हो यानी के

उसे आप मान देते ही हो । यही भाव यहाँ पर निहित है कि ये साँप अथवा मन, आत्मा को बाहर ले जाता है यहाँ इस दसवें द्वार पर उसे टिकने ही नहीं देता । लेकिन इस प्रकाश को देखते ही ये यहाँ पर टिक जाता है सदा के लिये । फिर आप इस साँप से जैसा चाहो अपना कार्य सिद्ध कर लो निश्चित रूप से । यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो कि ये प्रकाश जो केवल एक रागमई आवाज से निरन्तर प्रत्यक्ष होता रहता है, निरन्तर इस आत्मा को ले जाने के लिये प्रत्यक्ष उपलब्ध रहता है । अब ये आप की विशेष बुद्धि है कि आप यहाँ पर किसी और के आने की कल्पना रख कर, उसे साकार बनाने के लिये अपना सारा जीवन इस व्यर्थ की वासना को पूरा करने में व्यर्थ गवां बैठते हो । जो आया हुआ है उसकी अवहेलना आप को बहुत महंगी साबित होगी इसे आप निश्चित रूप से जान लो । मिसाल से आप विचारो कि एक मनुष्य हाथ में गाड़ी की चाबी लिये ठीक आप के सामने बैठा हुआ है और आप का ही मुँह देख रहा है, केवल यह सुनने के लिये कि आप उस से कहो कि भाई चलो चलें ! और वह बिना कुछ कहे तुरन्त उठ कर के आप को साथ लिये चल देता है जब आप जाना चाहें तुरन्त बिना विघ्न आप को वहाँ पहुँचा देता है । उसे भुला कर आप या तो अपने दूसरे विशेष-2 कार्यो में ही अपने को व्यस्त रखते हो । अगर जाना भी चाहते हो तो किसी और के आने का इन्तजार करते हो । वो विशेष-2 नाम अथवा शक्लें, पता नहीं क्यों आयी

नहीं अभी तक आप के साथ चलने के वास्ते अथवा आप को ले जाने के लिये क्योंकि आप जैसी दुर्लभ हस्ती को ले जाने के लिये किसी ड्राईवर की भी तो जरूरत पड़ेगी ही तो आपका दुर्लभ ड्राईवर आपके इन्तजार के बावजूद नहीं आता ये अलग बात है कि इस कीमती इन्तजार में आप का पूरा का पूरा जन्म ही व्यर्थ चला गया पर ये "कीमती इन्तजार" आप की अधूरी अथवा बाकी शेष केवल आप को मुँह चिढ़ाने या काला रंगने के लिये आवश्यक रूप से बच ही गई निश्चित रूप से । और अगर गल्ती से कोई "कब्र विशेष" आ भी गई तो, इस पहले से आये हुऐ के मुँह पर तो थूक ही पड़ ही जायेगी निश्चित रूप से याद रखिये कि ये "आया हुआ" इतना सस्ता नहीं है कि आप जब चाहें इस पर थूकते रहेंगे और वो खामोश बैठा आप की थूक चाटता रहेगा । अर्थात आपको यह थूकना बहुत महंगा साबित होगा निश्चित रूप से । ये समस्त धन्धा आप को अनन्त काल के लिये इस जेलखाने का कैदी बनने में ही केवल मददगार साबित होगा केवल निश्चित रूप से । जरा सोचो कोई आप को ले जाने के लिये आये बैठा हो और आप बार-2 उठ कर कभी खिड़की से झांको, कभी दरवाजे से बाहर निकल कर गैलरी में लटको और चिल्लाओ, कि पता नहीं अभी तक क्यों नहीं आया मुझे देर हो रही है । अपने को उस, आये हुऐ मनुष्य के स्थान पर रख कर के दूसरे जाने वाले के व्यवहार को देख कर के, जो अनुभव आप को होगा, उसे आप

"परमात्मा का निजी अनुभव" जान कर के अपने लिये अपनी ही कलम से जुर्माना लिख लो, सब कुछ आप को तुरन्त समझ में आने लगेगा कि आप के इस निकृष्ट कार्य का क्या नतीजा निकल चुका है । और आप भ्रम में भूले अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने में ही लगे हुऐ हो । "भ्रम भूले अज्ञान अंधले भ्रम-भ्रम फूल तोरावै । निरजीउ पूजेह मड़ा सरेवह सभ बिरथी घाल गवावै ।" अज्ञानता के अन्धकार में डूबी हुई आत्मायें ही अपने जीवित जन्म अथवा फूल को तोड़ अथवा खर्च करके निर्जीव वस्तुओं अथवा कब्रों का, शरीरों का ही ध्यान तथा पूजा करने में ही अपने "दुर्लभ मनुष्य" के जन्म को सदा के लिये खो बैठती हैं । "गुर के चरण रिदै ले धार ।" यहाँ "मूरत" का भाव ये है कि ये प्रकाशित शब्द नाम की महामारी हर वक्त निरन्तर प्रत्यक्ष है इस पर तू यकीन कर क्योंकि इस काले से शैतानी आवरण के कारण ये शंका उत्पन्न होती है कि शायद ये झूठ है । इसी भ्रम से लड़ने के लिये आप को ये उत्तम मनुष्य का जन्म मिला है । इसी लफज का प्रयोग "अकाल-मूरत" में परमात्मा के साथ किया गया है कि तू यकिनी तौर पर निश्चित रूप से जान लेवे कि काल अथवा शैतान से भी ऊपर कोई और सुप्रीम ताकत अथवा "परम चेतन सत्ता" हर वक्त जड़ चेतन में निरन्तर विद्यमान अथवा प्रत्यक्ष रहती ही है निश्चित रूप से । जब कोई आकार अथवा मूरत ही उस प्रभु की नहीं है तो फिर चरण कैसे हो सकते हैं ? "चरण" का भाव है

केवल शरण । जो उस अकाल पुरख परमात्मा के सिवा और कौन तुझे देने में कभी सुपने में भी समर्थ हो सकता है इस निकृष्ट जेलखाने में ? अर्थात अपने मन यानी इस भयानक साँप से बचने के लिये तू उस प्रभु की शरण में अपने को समर्पित कर दे ! और कोई भी सुपने में भी तुझे मदद करने में असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से, तू ऐसा समझ ले अभी से अगर बचना ही चाहता है तो । "गुरू पारब्रह्म सदा नमस्कार" अब गुरू लफज का जो अर्थ बताया गया है तो उसकी साक्षी इस प्रभु वचन से स्पष्ट है कि ये लफज पारब्रह्म, परमात्मा के स्थान पर प्रयोग किया गया है। क्योंकि "सदा" लफज केवल रहने वाली निरन्तर "परम चेतन सत्ता" के लिये ही प्रयोग में लाया जाता है । और वो सत्ता केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" के सिवाय और कुछ भी नहीं है । अब उसे नमस्कार कैसे करोगे, अब उस का कोई रूप नहीं है तो फिर आप उस का अंश होने के कारण आप का भी कोई रूप कैसे हो सकता है ? फिर आप का "नमस्कार" तो केवल रूप ही रूप को झुक कर के इस लफज को साकार कर सकता है । यहाँ रूप का तो कोई विचार सुपने में भी नहीं है । फिर क्या बीमारी है ये नमस्कार ? इसका भाव है कि तू केवल इस अकाल पुरख परमात्मा की जो आत्मिक प्रेरणा, तुझे लिख कर के "ग्रन्थ" के रूप में दी गई है अपनी निजी जिन्दगी को तू इस में लिखे प्रभु वचनों अनुसार व्यवहारिक बना निश्चित रूप से, ऐसी ही केवल

नमस्कार उस प्रभु के बराबर में तुझे मान प्राप्त करवाने में साधन साबित होगी । और ये सत्ता सदा अथवा निरन्तर तेरी मदद को हर समय तुझे उपलब्ध मिलेगी निश्चित रूप से । इस वचन में जो ताला लगा है उन की चाबी इसी वचन में छुपा करके रख दी गई है । मेहनत करो और चाबी को प्रत्यक्ष करके अपने ताले को खोल कर अपने को सदा के लिये इस जेलखाने से मुक्त करवा लो । बिना मेहनत ये दुर्लभ चाबी कभी भी किसी को भी किसी भी काल में, किसी भी यत्न अथवा सिफारिश विशेष से सुपने में भी मिलनी केवल असंभव ही है निश्चित रूप से इसे गाँठ बाँध लो अभी से । इस प्रभु वचन में कभी भूले से भी किसी शरीर विशेष मनुष्य का ध्यान करने का भाव नहीं है । (विशेष सावधानीः- बहुत से गद्दीधारियों ने इन दोहरे अर्थ वाले वाक्यों का अर्थ अपने ऊपर घटवा करके, पूरी मनुष्य जाति को अन्धें कुँऐं में ढकेलने का धन्धा अपना रखा है ! कोई भी मनुष्य शरीर तो क्या आत्मा कभी-2 परमात्मा कल्पना में भी होना अथवा बनना संभव ही नहीं है निश्चित रूप से ऐसा जान ले।)

प्रभु प्रेरित वचनों से अन्दर का प्लान अथवा नक्शा स्पष्ट हो जाता है कि यदि तू सचमुच अपने को इस भयानक कैद खाने से मुक्त करवाना चाहता है तो पहले बाहर के नक्शे पर चल अर्थात अपने समस्त व्यवहार ईमानदारी से इस "अकाल

पुरख परमात्मा की आत्मिक प्रेरणा" को साक्षी बना कर के व्यवहारिक रूप से चरितार्थ कर तथा फिर अन्दर इस शरीर के अपनी उस तलाश को पूरा करने के लिये इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के जाल को काटने के लिये केवल उस "परम चेतन सत्ता" को ही निर्मल पाक हृदय से जप तथा ध्यान कर निरन्तर। शेष कार्य तेरा नहीं है। इसलिये शेष सब उस पर छोड़ दे वो समर्थ है हर काल में सब कुछ करने में, अर्थात वो काल का भी काल यानी के अकाल ही है निश्चित रूप से !